लुप्त होता चन्द्रमा

सिन्धू पोर्टर द्वारा पुनर्लिखित

यह कहानी शनिवार ४ जुलाई, २०२० को गुरुपूर्णिमा के सम्मान में आयोजित 'मन्दिर में रहो' सत्संग के दौरान सुनाई गई थी।

चियोनो, पहाड़ियों में स्थित, सुप्रसिद्ध ज़ेन मठ में कुछ ही महीनों से सेवा कर रही थी। मठ में किसी भी समय किसी भी कार्य की आवश्यकता होने पर उसे करने के लिए उपस्थित रहना—यही वह चीज़ थी जिसने चियोनो को आकर्षित किया था कि वह मठ की चार दीवारों के भीतर एक तपोमय जीवन जिए। काम में अन्य लोगों की मदद करते हुए और चिकने पत्थर के फ़र्श को झाड़ते-पोंछते समय, वह केवल एक बात के बारे में विचार करती रहती और वह थी, आत्मसाक्षात्कार के लिए उसकी ललक। वह अत्यन्त उत्कटता के साथ उस मार्ग की खोज में थी जो उसे वहाँ तक ले जाएगा।

एक दिन चियोनो हिम्मत जुटाकर एक बुज़ुर्ग साध्वी के पास गई। वे उस समय बाहर के बगीचे की तरफ़ जा रही थीं और चियोनो की ही ओर चली आ रही थीं। चियोनो ने मृदुल स्वर में कहा, "मेरा जन्म एक सामान्य-से परिवार में हुआ है और मैं लिखना-पढ़ना भी नहीं जानती। यद्यपि मेरे पास कोई कला-कौशल नहीं है, फिर भी क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे मैं एक दिन उस मार्ग तक पहुँच सकूँ जिस पर महात्मा बुद्ध चले थे?"

साध्वी मुस्कराईं और उन्होंने कहा, "बहुत सुन्दर प्रश्न है तुम्हारा, मेरी प्यारी बच्ची! बौद्ध धर्म के अनुसार, हर व्यक्ति को अपने अन्दर इस तीव्र इच्छा को दृढ़ता से बनाए रखना चाहिए कि उसकी जागृति हो। यदि तुम अपने सच्चे स्वरूप को जानना चाहती हो तो साधना करते समय अपने विचारों के स्रोत की ओर मुड़ो। हर क्षण यह याद रखो—हर चीज़ का मूल स्वरूप एक ही है, और वह पूर्ण ही है।"

उन दयालु साध्वी की बातों को याद रखते हुए, चियोनो ने निश्चिय किया कि अब वह रोज़मर्रा के हर छोटे-बड़े काम की ओर और भी ज़्यादा ध्यान देगी। हर कार्य में वह इस सिखावनी को लागू करती और पूरी तरह समर्पित होकर वह कार्य करती। एक ही चीज़ थी जिस पर वह अपना ध्यान

एकाग्र रखती : उसे जिस लक्ष्य की लगन लगी थी, उससे दूर ले जाने वाले हर विचार को मन से निकाल देना।

एक निःस्तब्ध, पूर्णिमा की रात को, बाहर से पानी भरकर लाने के लिए चियोनो ने अपनी बालटी उठाई। वापस आते समय, उसका ध्यान, बालटी में भरे पानी की सतह पर पड़ते चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब पर एकाग्र हो गया। चन्द्रमा कितना उज्ज्वल और पूर्ण था! अचानक, उसकी बालटी की तली जो बाँस से बनी थी, टूट गई और सारा पानी बह गया। पानी की एक बूँद भी बालटी में नहीं बची। उस आकस्मिक क्षण में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब भी लुप्त हो गया। पानी बहने के साथ ही, उस पर से दीप्तिमान चन्द्रमा की छवि भी लुप्त हो गई। यह देखकर, चियोनो को आत्माक्षात्कार की वह स्थिति प्राप्त हो गई जिसके लिए उसके अन्दर लालसा थी।

अपने अनुभव का वर्णन करते हुए चियोनो ने एक कविता लिखी :

मैंने यह करके देखा, मैंने वह करके देखा,

मैंने कोशिश की कि मैं बाँस की बालटी को सँभाले रखूँ,

इस आस से कि वह कभी न टूटे।

पर अचानक तली टूट गई :

अब पानी नहीं रहा।

जहाँ पानी इकट्ठा नहीं होता, वहाँ चन्द्रमा भी नहीं रहता।

मेरे हाथ में केवल रिक्तता है।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।